कोंडा रेड्डी जनजाति के ज्ञान की उपयोगिता

स्रोत: द हिंदू

हाल ही में वन अधिकारियों को यह पता चला कि एक **भारतीय लॉरेल वृक्ष या भारतीय सिल्वर ओक (फाइकस माइक्रोकार्पा) की छाल**, विशेषतः गर्मियों में,जल का भंडारण करती है। जैसा कि **कोंडा रेड्डी जनजाति** द्वारा दावा किया जाता है।

- मूलतः **भारतीय लॉरेल वृक्ष** दक्षिण पूर्व एशिया और भारत के क्षेत्रों में पाए जाते हैं, यह उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में उगते हैं। यह चमकदार, **घने हरे पत्ते वाले** सदाबहार वृक्ष होते हैं, और इसके लेटेक्स रस का उपयोग रबर उत्पादों के निर्माण में किया जाता है।
- कोंडा रेड्डी जनजाति **गोदावरी क्षेत्र में पापीकोंडा पहाड़ी शृंखला** (आंध्र प्रदेश) में निवास करने वाले **कमज़ोर आदिवासी समूह** हैं और उनकी मातृभाषा तेलुगू है।
- पापीकोंडा राष्ट्रीय उद्यान (Papikonda National Park- PNP) को वर्ष 1882 में आरक्षित वन, वर्ष 1978 में वन्यजीव अभयारण्य और वर्ष 2008 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।
    - PNP में **आर्द्र पर्णपाती वन** पाए जाते हैं, इनमें बाघ, चूहा, हरिण, गौर आदि जैसी पशु प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

और पढ़ें: जनजातीय समाज को सशक्त बनाने के लिये ओडिशा और आंध्र प्रदेश में ST सूची में PVTG को शामिल करने हेतु विधेयक

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/resourcefulness-of-konda-reddi-s-tribe-s-knowledge